दिनेश कुशभुवनपुरी

जन्मस्थान- चाँदपुर, बरौंसा, सुलतानपुर(उ. प्र.)
शिक्षा- बी.एस-सी., एम.बी.ए.
प्रकाशन- साझा संकलन उत्कर्ष काव्य संग्रह, गीतिकालोक-2 एवं कई प्रतिष्ठित पत्र पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित।
सम्मान- काव्य किरीट सम्मान (साहित्य प्रोत्साहन संस्थान मनकापुर, गोंडा), हिंदुस्तानी भाषा अकादमी सम्मान, नई दिल्ली इत्यादि।
सम्प्रति- बेटर लाइफ फार्मिंग सेन्टर, वाराणसी

आत्ममुग्धता के अभियंता

वादों के नमकीन समोसे,
दावों के रसगुल्ले चिकने,
गठबंधन के चौर्य चितेरे,
लोभ बाँटते कागज में फिर।

महारथी कलयुग के सारे,
अर्जुन सुतको चले रोकने।
चालाकी का व्यूह रचाकर,
नैतिकता को लगे नोचने॥
कीकर के कर्कश कंटक सब,
औने पौने बौने ठिगने,
लंबाई के लंपट चेहरे,
छोर लाँघते निर्लज में फिर।

दुर्भावों के भ्रष्टाचारी,
हुए एकत्रित घर में तम के।
बोल बताशा बाँट रहे हैं,
श्वेत वसन के धारक जम के॥
अहंकार की छतरी लेकर,
मुस्कानों की गठरी लेकर।
घूम घूमकर दहलीजों पर
दाँव साधते पर्पज में फिर।

आडम्बर के चिर आलापी,
नाट्यकला के नटवर नागर।
आत्ममुग्धता के अभियंता,
गागर में भरते नित सागर।
अधिकारों का अभिनंदन ले,
अपराधों का अवगुंठन ले,
मक्कारी के मंसूबों से
आज नाचते पदरज में फिर।

अवशोषण के अर्थशास्त्री

अंधकार में दौड़ रहीं हैं,
नित पीड़ाएँ परिवर्तन की।
असमंजस की माला पहने,
मंत्र जाप करतीं शंकाएँ॥

दुविधाओं की लिए कड़ाही
तली जा रहीं नित सौगातें।
अहंकार के बर्तन सारे
लगा रहे हैं कुटिल कनातें॥
चालाकी के परदे वाले
अभिनय करते संवर्धन की।
दुर्भावों के अवगुंठन में
विकल खड़ी रोतीं आशाएँ॥

दर्द देख दुख के भीतों का
मन के कमरे हुए अनमने।
मृगतृष्णा की छत पर बैठा
देख रहा अनहोनी सपने॥
ऊष्मा के अन्वेषी सारे
बात कर रहे तम सर्जन की।
अवशोषण के अर्थशास्त्री
कुविचारों की गढ़ें कथाएँ॥

नयनों की आतुरता का नित
छद्म नियति करता अभिनंदन।
कटुता के कल्मष भावों को
आडम्बर देता अवलंबन॥
माया के महिमामंडन में
झूठ लपेटे सच गर्दन की।
नैतिकता के अवमूल्यन में
कौन पढ़े अब वेद ऋचाएँ॥

ISSN:2583-8849